International Journal of Applied Research 2017; 3(4): 338-340

ISSN Print: 2394-7500
ISSN Online: 2394-5869
Impact Factor: 5.2
IJAR 2017; 3(4): 338-340
www.allresearchjournal.com
Received: 15-03-2017
Accepted: 16-04-2017

कांता रानी
गांव बप्प जिला सिरसा हरियाणा, भारत।

Correspondence
कांता रानी
गांव बप्प जिला सिरसा हरियाणा, भारत।

हरियाणा के कबीर पंथी संत साहित्य में आध्यात्मिकता

कांता रानी

प्रस्तावना

हरियाणा में कबीर पंथ काफी पुराना है, हरियाणे की कबीर पंथी षाखा पूर्णरूपेण स्वतंत्र है। जिसका सीधा संबंध कबीर से है। मध्ययुगीन संत इंद्राज जो बादली निवासी थे के अनुसार उनके षिश्य मध्ययुगीन संत इंद्राज, मध्ययुगीन संत हरदेदास आदि थे।

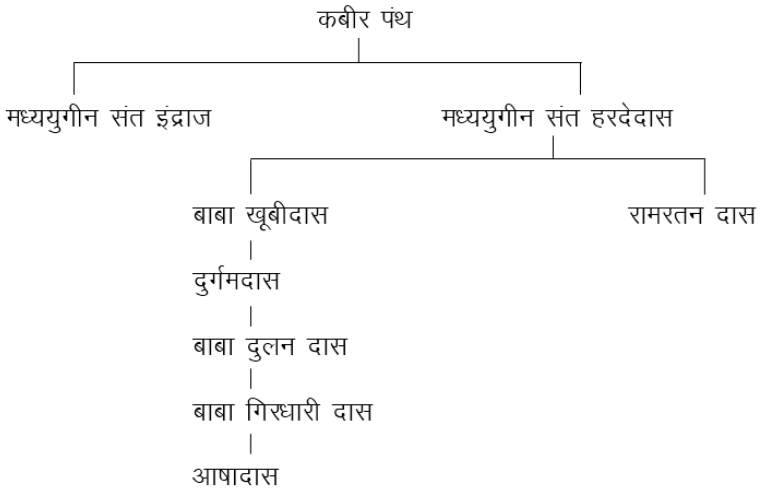

आषादास के पष्चात थुराणा की गद्दी पर बैठने वाले महंत–गुसाईदास, बालकदास, साहिबदास, साधुराम, प्रेमदास, प्राणदास, गोपालदास, नरसिंह दास, अर्जुनदास, रामतीर्थदास, महंत माता षंकुतला विराजम रही है। इनके बारे विस्तृत जानकारी का अभाव है। हरियाणावी कबीर पंथियों की आध्यात्मिक साधना सुरति–षब्द योग की है। उन्होंने मानवषरीर पर ही परमतत्व की गवेशणा है और वह परंपरा आज भी सुचारू रूप से चलापमान हैः

गुरू विशयक– हमारे गुरू इंद्राज कूं। हम पर करी सहाय।
भेद बताया आयकर, सतगुरू दिए मिलाए।।
हमरे गुरू इंद्राज कूं, दीया भेद बताय।
गगन मंडल के बीच मैं, सतगुरू दिया मिलाय।। [1]

(हरदेदास वाणी)

दुर्गा उड़ै गगन में धरण आवै, खिंड मिंड ना होई।
ऐसा जलवा हमने देखा, समझे बिरला कोई।। [2]

(दुर्गादास वाणी)

बिन भजन चाम किस काम की, तू पी प्याली सतनाम की,
तेरी कालजाल जंजीर..... ।[3]

(सूरजदास)
साधना संबंधी साखीः

नाभी नासिका बीच में उलटी चक्षु फेर।
सतगुरू साहिब सहजैं मिलैं कछू ना लागै देर

(दूलनदास)

ऐसा खेल बताया सतगुरू देख अचम्भा आई
पलक मोह, अलख विराजै त्रिसरेन से झीना भाई।।
नैन खोल देखों नैनों आगे बाहर भीतर एक समाई।।
सूरज चांद बिन चौदना ताकी षोभा कहीं न जाई।।
दीद बिना वह दीदा देख नीद मांह बिराजै सांई
सुर्मा की रेख–भेख ना बाना अधर धार में रहैं हठराइ।
जात–पात वाक कछू नाहीं नांह कहीं जननी जाई।।
दूलनदास कहैं यह अगम से उतरी हेला देकर दर्द फरमाई।।[4]

(दूलनदास)

बंगला अजब बनाया–तेरा पार नहीं पाया।
पांच तीन मिल नीम खिंचाई, अजब कारीगर आया।।
आठ मास नौ चिंता लागे, गरब सिख साज जुडाया।
कुदरत की कली पिटाई, पक्का ही रंग चढ़ाया
सात द्वीप नौखंड दसबारी, न कोई घड़िया ठहराया
अधर तख्त पर सतगुरू बैठा, अखंड दिवला जलाया
खूबीराम मिले गुरू पूरे, आप ही आप लखाया
गिरधारी दास राग बंगला में, निरखा रूप सवाया।[5]

कबीर पंथी आपस में 'सत साहेब' कहकर अभिवादन करते हैं आज कबीर पंथ का सषक्त प्रचार मध्ययुगीन संत रामपाल जी महाराज करौंथा स्थित आश्रम है जो कबीर वाणी घर–घर जाकर पहुंचाने का बीड़ा उठाया हुआ है।
हरियाणा के मध्ययुगीन संत साहित्य में हरियाणा के दादू पंथ का विषेश महत्व हैं दादूपंथी साधुओं को अनेक देष स्थान, वेषभूशा, रहन, सहन, जीवनयापन, उपदेष आदेष प्रचार–प्रसार के ढंगों में विभिन्नता रखने के कारण, उन्हीं विभिन्नताओं के आधार पर छः मुख्य वर्गों में विभक्त किया गया है– यथा खालसा विरक्त, दखनाधा स्थानधारी, उतराधा स्थानधारी, नागा और तपसी [6] इनके षिश्यों में बाबा बनवारी दास, मध्ययुगीन संत हरिदास प्रसिद्ध है। वैसे तो इनकी षिश्य परंपरा अत्यधिक समृद्ध है। इनके षिश्यों का वर्णन गद्दियों समेत निम्नवत हैः–
केवलदास–रानीला, कनीराम–बुवाणी, हरनाम दास–भिवानी, कल्याण दास–माणकरवास, भगोत दास–गागड़वास, अटलराम–सौभर, मनोहर दास–गूढ़, सहजराम–झज्जर, हेतम दास–तालाब, कांषीराम–धागड़, धर्मदास–रमतेराम, मालूकदास–उदेषमसर, दयाराम जी–रामतेराय, परषुराम–मोखरा, मानदास–हरना (?) नेतराम–पीपलोदा, छतूयोहडड़ा, आत्माराम–भैणी, नंदरामजी–कलानौर, चेतराम–बौद्ध, सारंगदास–कहानौर, चरणदास–दूबलधन।
हरिदास जी की रामलीला गद्दी की षिश्य परंपरा इस प्रकर है– हरिदास जी, केवलदास जी, बाबा बिसनदास, हजारीराम बुद्धराय, गुमानदास, मोटराम तथा रामदास।
मध्ययुगीन संत हरिदास की बाणी में साधना संबंधी संकेत पर्याप्त मात्रा में उपलब्ध होते हैं। इसी आधार पर हरियाणावीं दादूपंथी मध्ययुगीन संतों की साधना का स्वरूप तथा हुआ है। एक स्थान पर हरिदास जी कहते हैं कि–सुरति सुहागन प्रसन्न होकर मंगलराग गा रही है, उसको सतगुरू ने षब्द बतला दिया है और इस विधि से इसी जन्म में प्रिय का साक्षात्कार संभव हो गया है [7] सतगुरू ने सुरति का षब्द से मेल करवा दिया। इस सुरति–षब्द साधना में सुरति, मन तथा पवन (प्राण) सभी को एक कर त्रिकुटी में ध्यान लगाना पड़त है। इस ओर संकेत करते हुए हरिदास का कहना है कि मन, पवन तथा सुरति एक होकर तट पर भूल रहे हैं। 5 तत्व 25 प्रकृति स्थित हो गए हैं आध्यात्मिक वाणियां निम्नवत हैंः–

गुरू महिमाः– गोबिंद बैठा गोप हुय, ज्यों कूंवे में नीर।
गुरू डोरी बिन हरिदास, जल पीवै नहीं बीर।। [8]

(हरिदास)

यह विचार सागर कियो, जायें रत्न अनेक।
गोप्य वेद सिद्धांत तै लहत सविवेक।। [9]

(निष्चलदास)

मेरी माई री अपनो पतिव्रत कीजै।।
कंवल नइन के गुण किन गावै, जब लग जग में जीजै।। [10]

(हरदास)
दादू पंथ में संध्या बदन के दादू जी की 'पंथ' आरती का गायन एक नियम है। आरती का एक इस प्रकार हैः–

इहि विधि आरती राम की कीजै।
आत्मा अंतर वारणा लीजै।।
तनम न चंदन प्रेम की माला। अनहद घंटा दीन दयाला
ज्ञान का दीपक पवन की बाती।
देव निरंजन पांचों पाती आनंद मंगल भाव की सेवा।।
मनसा मंदिर आत्म देवा भक्ति निरंतर मैं बलिहारी।
दादू न जाने सेवा तुम्हारी [11]

संपूर्ण आरती में ऐसे ही 4 ओर पद हैं। दादूपंथी आपस में मिलने पर सत्यराम से अभिवादन करते हैं। जिन्होंने जीव के गर्भ को छुआ व परमतत्व विवेचन कर उस तक पहुंचने का मार्ग प्रषसत किया ।
समता पंथ के जनक का नाम मध्ययुगीन संत मंगतराम जी थे। यह पंथ निर्गुण संप्रदाय की आधुनिक कड़ियों में एक महत्वपूर्ण कड़ी हैं। 'श्री समता प्रकाष' ग्रंथ का गौरव–ग्रंथ है, जिसमें महाराज जी की पद्यबंध वाणी हैं। अपने साहित्य में उन्होंने परम पुरूश की प्रार्थना की है दूसरे अंग में 'समदर्षन योग' षीर्शक के अंतर्गत पांच मार्ग (अध्याय/प्रसंग) है। पहले मार्ग में 'सारततंनाथ' के अंतर्गत संसार की उत्पत्ति, मुस्लमानी (उत्पत्ति) भेद, सतगुरू के लक्खण, बृहम की पहचान, गुरूमुख, मनमुख पर विचार, सतनाम की असलियत, सच्चा पेम, सत विष्वास यानी यकीने–पाक, सत्पुरूशार्थ यानी साची कौषष, सत विचार यानी साचीी सौच, निर्मानता या आजशी, पर उपकार यानी ने, अपनी वस्तु पर मध्ययुगीन संतोश यानी हक षनासी, प्रेम, यानी लागरज मुहस्बत, सादगी, सतसंगत तथा मौद की याद आदि पर विचार किया गया है। दूसरे मार्ग में 'अर्थ विज्ञान यात्रा अरमभते' तीसरे मार्ग 'योग चिंतामणि' के अंतर्गत योगद्वाा परमतत्व की प्रास्ति विभृत है। चौथे मार्ग में 'विवके माला' में सतज्ञान विवके का महत्व दिखाया गया है। पांचवें मार्ग 'सतसार प्रकाष' के अंतर्गत आत्म–रूप सत्य की चर्चा है।[12] तीसरा अंग का षीर्शक 'समता स्थित योग' चौथे 'चरजींव गोश्ठ' जिसमें आध्यात्मिक तत्व विवेचन किया गया है। पांचवा अग 'ष्वितर परबत गोश्ठ' समता सार योग, सातवें 'विज्ञान योग' का वर्णन विष्लेशण है।
समता तत्व मंगतराम जी की दृश्टि में परमतत्व सत्य अथवा परमतत्व का समषील है।[13] उनका मत है कि सतमत का ज्ञान होने से द्वानंद की प्राप्ति होती है व यम की फांसी से मुक्ति मिल

जाती है। समता योग से सब मैल कर जाते हैं, चेतन का चेतन के साथ मेल हो जाता है। समता ज्ञान ही सच्चा ज्ञान है। सारी सृश्टि का आरंभ तथा अंत समतात्व ही है। [14]
समता पंथ की साधना पद्धति भी मध्ययुगीन संतों की पारंपरिक पद्धति सुरत षब्द योग हैं। 'समता विलास' के अनुसार 'समता योग यानी सुरत षब्द की एकता' सिमरन योग का अभ्यास, 'षब्द प्राप्ति यानी ध्यान होगा' षब्द में स्थित होना, यही राजयोग हैं सहजयोग समता का नित नियम है। समता पंथ के पांच मुख्य नियम हैं–सादगी, सत्य, सेवा, सत्संग, सत सिमरन। उनके आध्यात्मिक चिंतन बिंदू विषेश उल्लेखनीय हैं।

नित ही षब्द समाध में, पुरती भई अडोल
मंगत मिटी सब वासना, सुन सतगुरू वचन अमोल।[15]

सुरति की अंतर्मुख करके नाम जपने तथा षब्द से प्रेम करने से अविगत ज्योति का प्रकट होने का विवेचन भी उपलब्ध होता ही यथाः

खैच के सुरती अंतर कीनी, नाम सिमरन की रसना लीनी।
उपरस जीवन धनी उदासी, आलख, षब्द संग प्रीति बिलासी।।
खेम कुषल तत्र प्रगट पाई, अवगत जोत निरंतर ध्याई।[16]

संत मंगतराम ने धर्म के स्वरूप का अवगाहन करने को श्रेष्ठ साधन बतलाया हैं धर्म की महिमा को निरूपित करते हुए वे कहते हैंः–

तन मन अपना दीजिए, साचे धर्म के मांहि।
मंगत कहे पुकार के, बौहड़ गरम न पाई।[17]

समता पंथ का महामंत्र हैः
ओइम ब्रह्म सत्यम, निरंकार अजनमा अद्वैत पुरखा सर्वव्यापक कल्याण मूरत परमेष्वषये नमस्त। [18] यह मंत्र समता पंथ का मूल मंत्र गुह्य मंत्र तथा महामंत्र कहलाता है। इस मंत्र का महात्मय षाष्वत है। स्वयं मध्ययुगीन संत मंगतराम के षब्दों मेंः–

तिरयोदेष अक्षर मंत्र यह, सरब सिद्ध दातार।
जो सिमरे नित प्रेम से, मंगल पाए अपार।
महमा सत सरूप की, सब अक्षर पहचान। [19]
चार वेद और सिमरती, सब का सार निधान।

निश्कर्शः
कहा जा सकता है कि समता पंथियों का अभिवहन षब्द 'ब्रह्म सत्यम' उनका ब्रह्म पूर्ण परमेष्वर है। वह अखंड, अवगत, निष्बानी तत्व है, हव अजर–अमर, निरंकार, अजन्मा, अगोचर, ओंकार, मुरारी, प्रभु, परमात्मा, आनंद स्वरूप, विषम्भर, सरब अतीत, गोविंद, गुणातीत, सर्वव्यापक, अगम, अगाध, अध्यात्मक व सर्वेसर्वा सृश्टि का एक मात्र संचालनकर्ता है।

संधर्व सूची

1. हृदय प्रकाष, गुरूदेव का अंग, 2,3
2. सूरजभान, हरियाणा का संत साहित्य, पृ. 143
3. वही, पृ. 144
4. वही, पृ. 147
5. सूरजभान, हरियाणा का संत साहित्य, पृ. 148
6. वही, पृ. 155
7. श्री हरिदास वाणी, पद 150, पृ. 75
8. वही, पद 240, पृ. 22
9. निष्चल दास, विचार सागर, पृ. 327–328
10. हरदास की वाणी, राग धनाश्री के उदधृत
11. सूरजभान, हरियाणा का संत साहित्य– पृ. 174
12. सूरजभान, हरियाणा का संत–साहित्य, पृ. 255
13. परमानंद, हसं चेतावनी, पृ. 59
14. वही, पृ. 10
15. प्रमानंद, हंस चेतावनी, पृ. 108
16. वही, पृ. 109
17. वही, पृ. 110
18. सूरजभान, हरियाणा का संत–साहित्य, पृ. 253
19. सूरजभान, हरियाणा का संत साहित्य, पृ. 254